दर्द की अमानत

सजीव कश्यप

विकास प्रिन्टर्स एण्ड पब्लिशर्स
मामा भाजा की दरगाह
पटानी का मोहल्ला, फड बाजार
बीकानेर (राजस्थान)

नीरज सक्सेना
विकास प्रिन्टर्स एण्ड पब्लिशर्स
मामा भांजा की दरगाह
फड बाजार, बीकानेर मूल्य ५०.००
द्वारा प्रकाशित
प्रथम सस्करण १९८६
विकास प्रिंटस एण्ड पब्लिशर्स
फड बाजार बीकानेर द्वारा मुद्रित

DARD KI AMANAT (Poetry)
by Sanjiv Kashyap
Publisher Vikas Printers & Publishers
Mama-Bhanja Ki Dargah
Pathanon Ka Mohalla
Phad Bazar Bikaner (Rajasthan) India
First Edition 1986
Price Rs 50 00 Printed by Vikas Printers & Publisher
Phad Bazar Bikaner

पल छिन जो मुझे प्रेरणा प्रदान करते हैं, उन पिताओ के करकमलो मे प्रस्तुत है यह प्रथम कृति 'दर्द की अमानत' ।

—सजीव कश्यप

वक्तव्य

'दर्द की अमानत' मेरा प्रथम प्रयास है। मेरी कविताओं में मेरा अनुभव अभिव्यक्त हुआ है। यह ध्यान जरूर रखा गया है कि मेरी अभिव्यक्ति सामान्य पाठक के लिये भी सुबोध हो। यही कारण है कि इन कविताओं में किसी भी प्रकार की जटिलता अथवा दुर्बोधता नहीं है।

सभी कविताएं छन्द मुक्त हैं। अनावश्यक प्रतीकों की भरमार नहीं है। सम्प्रेषणीयता का ध्यान में रखते हुए ऐसा किया गया है।

पता नहीं मेरी ये कविताएं पाठकों को कैसी लगेंगी और समालोचक इनके लिये क्या सोचेंगे ? फिर भी यह संग्रह सहृदय पाठकों की सेवा में प्रस्तुत करते हुए मुझे प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। मुझे तो बस इतना ही कहना है अन्य सब बातें मैं पाठकों और समालोचकों के लिये छोड़ देता हूँ।

बीकानेर

—संजीव कश्यप

अनुक्रमणिका

स्व० श्री अम्माजी



साथी

आत्मा तृप्त थी मेरी
न कोई चाहत थी
न ही किसी की जरूरत थी
आज तक कभी अकेला न था
सभी अपने ही तो थे ।
मगर जब से तुम्हें चाहा है
सभी को खो दिया मैंने
अकेला हो गया मैं
ऐसे एकान्तवास में
समझने लगा हूं साथी अपना
कागज व कलम को ।
क्योंकि तुम तक पहुंचने का
यही रास्ता श्रेष्ठ है ।

सपना

मेरा एक सपना है
मेरी एक आशा है
जिसके सहारे जिन्दा हूँ मैं।
कल फिर सपने में तुम्हें देखा
तुम्हारी आत्मा की ऊष्मा का
अहसास हुआ मुझे।
यूँ लगा कि तुम मेरे बहुत करीब हो
लेकिन जल्द ही वह क्षण बीत गया
जो दिल को सुखद लगा
चौंक कर जाग उठा मैं
और फिर सारी जिन्दगी सोचता रहा
था तो वह सुखद क्षण ही
जो गुजरने के बाद भी गुजरा नहीं
अब मेरे पास शरीर नहीं
सिर्फ आत्मा है
और वह भी वहीं सोच रही है।

पहली नजर

कौन कहता है
नजर भर देख लेने से
प्यार नहीं होता ?
ऐसा सोचना सन्देह पैदा करता है।
सच तो यह है कि
प्यार की शुरुआत तो
नजर भर देखने से ही होती है।
और यही पहली नजर सच है
बाकी सब झूठ है, फरेब है।

मैं और तुम

तुम्हारे हर बार बुलाने पर
दौड़ा आया हूं मैं तुम्हारे पास
इसी आशा के साथ
कि आज तुम वह कहोगी
जो मैंने चाहा है
मगर तुमने सदैव वही कहा
जो तुमने चाहा है।

तुम्हारे लिए

तुम्हारी चाहत के कारण
आसान है जिन्दा रहना।
अब मैं
अपने लिए नहीं सोचता
तुम्हारे लिए सोचता हूँ।
स्वयं की नहीं
तुम्हारी खुशी चाहता हूँ।
मेरी भावनाओं का घेरा
सिर्फ तुम्हारे इर्द गिर्द
घूमता रहता है।
इसलिए नहीं कि
तुम्हें परेशान करूँ।
वरन् इसलिए
कि काल-चक्र से भी
तुम्हारी रक्षा कर सकूँ।

अनजान

मैं समझता था
तुम्हारे और मेरे बीच कोई नहीं।
कोई नहीं जानता
कि मैं तुम्हें ।
लेकिन यह मेरा भ्रम था।
अब लगता है
सभी तो जानते हैं
इसीलिये तो रोज मेरे सामने
जिक्र करते हैं तुम्हारा।
यह जानने के लिये कि
तुम्हें इतना नजदीक से जानकर भी
मैं कितना अनजान बनता हूं।

भूल

गलती से कहीं मुझे तुम
दुखी मत समझ लेना
मैं उनसे खुश नसीब हूं
जो सांसारिक बंधन में बंध हैं।
सांसारिक बंधन अच्छा जरूर है
पर इसे सुखद समझ लेना
सबसे बड़ी भूल है।
हम भी देखेंगे कि
कितना सुख तुम पाओगी
हंस लो आज तुम मेरे नसीब पर
कल तुम अपने नसीब पर पछताओगी।
तुम्हारा पछतावा मैं नहीं देखना चाहता
मगर सर्वशक्तिमान के न्याय को
तुम भला कैसे ठुकराओगी?

विश्वास

लगभग सभी प्यार करते हैं
और डूबते भी हैं
अपने तरीके से
इसके पागलपन में।
भटके होंगे न जाने कितने ही
कितनों ने गम खाकर
अपने अस्तित्व को भी मिटा दिया।
प्रेमियों के लिये यह सब कुछ
मुश्किल नहीं वरन् आसान है।
मुश्किल है उस विश्वास को
सदैव बनाये रखना
जो विश्वास तुमने कभी किया था?
और उससे भी मुश्किल है
तुम्हारे लिये ही
उस विश्वास पर जीना
जिस विश्वास पर जीने की आशा
सदैव तुम अपने साथी से करते हो।

प्यार का पैमाना

तुम्हें याद भी न होगा
मैंने कभी तुम्हारी प्रशंसा नहीं की ।
आज बताता हू तुम्हें
प्रशंसा के माध्यम
मैं अपने प्यार का
  तला नहीं सकता ।
मेरे प्यार का मापने का पैमाना
मैंने तुम्हारे ही मन का माना है ।
जरूरत के समय
अपने मन में ही
पुकार कर देख लेना मुझे ।
फिर देखना मैं तुम्हारी
हर जरूरत का
पूरा करने में
समर्थ हू या नहीं ।
और उसी आधार पर
करना तुम मूल्यांकन मेरा

भावुक

अजीब
भावुक इन्सान हूँ मैं।
कितना आकुल हूँ
कितना अधिक व्याकुल हूँ।
कितना अधिक
इन्तजार है मुझे
क्यों मैं उसे
इतना अधिक याद करता हूँ।
यह जानते हुए भी
कि अब उसके
लौट आने का
प्रश्न ही नहीं उठता।

पछी

अब भी
कबूतर आते हैं
खुद ही ठहर जाते हैं
मेरी छत पर।
आकाश के पक्षी को
पालने का शौक
नहीं मुझे।
उड़ते हुए कबूतरों पर
नजर भी नहीं
डालता हूं मैं।
फिर भी
कबूतर आते हैं।
खुद ही ठहर जाते हैं
मेरी छत पर।
एक ने आकर
बहुत की गुटरगूं।
उस पंछी पर
मुझे बहुत प्यार आया।
मैंने उसे दाने दिये
फिर वह रोज
आने लगा
मेरी छत पर।
हम दोनों में
हो गयी अब
दोस्ती पक्की।

धीरे धीरे
उसका भय हो गया
पूर्णतया समाप्त ।
अब उसने मुझसे
छेड़छाड़ प्रारम्भ की।
मैंने खुद से
उस
कहीं अधिक
कोमल व पवित्र जान
छेड़छाड़ नहीं की ।
सोचता था
कहीं इस
चोट न लग जाय ।
बेचारा कोमल है
सह न सकेगा
शायद ।
अचानक
एक दिन
उड़ गया वह पक्षी
और लौट कर
फिर कभी न आया
मेरी छत पर ।
अब भी
याद आती है
मुझे उसकी ।
अब भी
कबूतर आते हैं
खुद ही ठहर जाते हैं
मेरी छत पर ।

मैं भला
उन्हें पाल कर
क्या करूं ?
कबूतर के पास
मुझसे अलग पांख हैं ।
उड़ना
उसका स्वभाव है ।
मैं उड़ना जानता नहीं ।
स्वतन्त्र
प्राणी का बांधना
मुझे भी अच्छा
लगता नहीं ।
बस
इसीलिये मैं कबूतर
पालता नहीं ।
स्वभाव से
कबूतर कभी पलता नहीं ।
अब भी
कबूतर आते हैं
खुद ही ठहर जाते हैं
मेरी छत पर ।

इन्सान

जैसे तुम हो
वैसा ही संसार है तुम्हारा ।
चाहोगे देखना
हैवानों का तो
हैवान मिल जायेंगे ।
चाहोगे देखना
देवताओं का तो
देवता भी मिल जायेंगे यहां ।
चाहोगे देखना
इन्सानों का तो
इन्सान नहीं मिलेंगे यहां ।
क्योंकि संसार में रह कर
हैवान या देवता बना जा सकता है ।
चाह कर भी
इन्सान बनना मुश्किल है ।
मैंने तो इन्सान बनने का
प्रयास करके देख लिया ।
तुम भी
प्रयास कर के देख लो ।

मेरी झोपड़ी

जहा मैं रहता हू
कैसा सुन्दर स्थान है ?
कैसा सौम्य दृश्य है ?
चारों तरफ पहाड़िया
पहाड़ियों के बीच
मेरी झोपड़ी।
झोपड़ी के किनारे
पास ही
विशाल झरना
बह रहा है।
दूर-दूर तक देखने पर भी
कोई दिखाई नहीं दे रहा है।
सिर्फ झरने का ही
स्वर सुनायी दे रहा है।
सभी तरफ
बर्फ जमी है
बहुत शांति है
मैं अकेला हू
इन्तजार में हू
कभी तो बर्फ हटेगी ही
कभी तो यात्री आयेंगे ही
देखने इस सुन्दर स्थली को।
मैं इन्तजार करता रहा
न कोई पथिक आया
न हटी कभी बर्फ ही।

बस मेरी उस
इ तजारी हालत पर
ईश्वर का
बहुत तरस आया ।
सुनी मैं ने फिर
देववाणी उसकी
वाला वह खुद मुझसे
तू उस सु दर स्थान पर
रह रहा है
जहा वष भर
वफ जमी रहती है ।
न कोइ पथिक यहा आता है
न ही कलियुग
क प्राणिया में
क्षमता है यहा आने की ।
फिर भी यदि तू
परलोक से हट
इहलोक का जाना चाहता है
तो वफ को हटा
बनाले अपना रास्ता खुद ।
मेरा उस सु दर स्वर्ग पर
न जाने क्यों
अब मन न लगा ।
उठ खड़ा हुआ
बहुत परिश्रम किया
हटा दी बफ
बना लिया रास्ता मैंने
और आ गया इस ससार में

जहा राग है
घृणा है
द्वेष है
स्वार्थ है
तुम भी हो
और अब मैं भी हूं।

कल

जो मैं आज हूं
वह कल का नहीं बताता ।
चाहे 'कल
भूत का हो
या भविष्य का ।

नहीं जानता

मैं अगर किसी को
नहीं चाहता
तो इसलिए
कि मैं जीने की
कला नहीं जानता।
अगर कोई
मुझे नहीं चाहता
तो इसलिए कि
मैं जीने की कला
नहीं जानता।

तुम्हारी देन

मेरे हृदय में
अब बहुत दया है
अब बहुत शांति है ।
कभी मैं भी कठोर था
तुम्हारी कठोरता के परिणाम स्वरूप
मुझे मिली है
शांति और दया ।

समालोचक

सर्वप्रथम कविता
जो मैंने बनायी थी
वह
एक समालोचक का
दिखाड़ थी।
वह मेरी
पहली व अंतिम
कविता थी।
जो किसी समालोचक
का दिखाड़ थी।
आज तक
बड़ा दुख है मुझे
उस कविता के
बिगड़ जाने का।

अनुभव

पहली बार जब देखा
समुद्र
अवाक् रह गया ।
कितना पानी
पानी ही पानी है
फिर भी कितना शान्त है ?
थोड़ी थोड़ी
किनारे पर हलचल है
ठीक हम इन्सानों की तरह
जो शान्त कभी नहीं होते
सिर्फ दिखाई देते हैं शान्त ।
उसकी हलचल को भी
आंखों की चमक व नमी
के माध्यम से
पहिचाना जा सकता है ।

डर

हमेशा डर रहता है
हमें इन्सानों को
खा जाने का
उन चीज़ों के
जिनका खाना
अनिवार्य है।
फिर भी दुःख
होता है हमें
उन चीज़ों को
खा जाने के बाद।

नया पुराना फूल

एक फूल खिला
आसपास उसके
बहुत सी थीं कलियां।
इन्तजार था फूल को
कोई कली अगर फूल बने
तो बात करूं मैं उससे।
आखिर फूल की
इन्तजारी घड़ियां
समाप्त हुई
बन गई हर कली
इक फूल।
नया हर फूल मुस्करा
रहा था।
पुराना फूल अब
मुरझा रहा था।
एक दिन उस राह पर
कुछ बच्चे आये
जहां खिले थे फूल।
हर मुस्कराते फूल को
चुन लिया उन्होंने
अपने लिये।
मुरझाये हुए फूल को
अब भी इन्तजार था
कोई आकर
चुनेगा उसे।

इन्तजार-इन्तजार में ही
बीत गयी
जिन्दगी उसकी ।
हर-भर पौध न भी
अपन ही अग
उस फूल का
अलग कर दिया अपन स ।

बारात

रात का समय था
एक बारात थी।
हम सब थे
बाराती उस बारात के।
सभी खुश थे
सफर लम्बा था उस बारात का
बैंड बज रहे थे
लोग नाच रहे थे
खूब प्रकाश था
आसपास उस बारात के
खूब धूम धड़ाका थी।
चलते चलते मैं थोड़ा पीछे रह गया
उस बारात से।
देखा अंधकार ही अंधकार है
जिस रास्ते से जा रही
बारात है
है उस रास्ते पर
एक कब्रगाह
कितनी शांति है यहां
मैं कितना पीछे रह गया
उस बारात से ?

समाज

ये समाज
गिद्धों व चीलों से भी
बदतर है।
वे बेचारे तो
लाशों को खाते हैं
अपना पेट भरने को।
समाज तो
नोंच डालता है
अच्छे-भले जिन्दा इन्सानों को।
बना देता है उन्हें
लाश से भी बदतर
और
फिर हंसता है
उनकी बदनसीबी पर।

राजधानी का आदमी

राजधानी
कितना बड़ा शहर है ?
कितने लोग हैं यहाँ ?
कोलाहल ही कोलाहल है
दौड़ रहे हैं
ठेले ट्रक, टैक्सी टम्पू
कार, रिक्शे, बस व डबल डेकर
बालक, महिलायें बूढ़े
सभी दौड़ रहे हैं ।
बड़ा मुश्किल है
स्त्री व पुरुष में
भेद करना यहाँ ।
बड़े विचित्र लोग हैं
दौड़ती बसों में
ढोर डंगरों की तरह कैद हैं ।
बन्दरों की तरह
लटके भी हैं
बसों में ।
तरह तरह की आवाजें
तरह तरह की बोलियाँ
लगता है
इस चिड़िया घर में
कोई प्रलय आने वाली है ।
आह !
गाँव छोड़
कहाँ आ गया मैं ?
कहाँ जाना है मुझे ?

भूल गया
हां याद आया मुझ
मैं लाल किला दखन आया था
अब लौट कर
जाना है
अपने ननिहाल का
लादी राड
बस का नम्बर ?
अर फिर भूल गया
किसस पूछू ?
मन हसा इस प्रश्न पर
हजारों लाग है
किसी स भी पूछ लू
सभी ता इन्तजार कर रह हैं
अपनी अपनी बसा की
डरत डरते
पूछा एक प्रभु से
लादी राड
जान वाली बस का
क्या है नम्बर भाइ ?
इतना पूछत ही
झल्ला गया वह प्रभु
बाला मुझस
अजीब आदमी हो
क्या भला मुझस पूछत हा ?
इन्क्वायरी स क्या नही पूछत हा ?
अवाक् रह गया मैं
दखता रहा उस प्रभु का
सोचता रहा यू

बस का नम्बर पूछकर
क्या कर बैठा कोई अपराध ?
इस भीड़ में न जाने
कहाँ खो गयी है संवेदना
लाल किले की तरफ देखा मुड़कर
वह भी हँस पड़ा था मुझ पर।

धोखा

हम इश्वर न
रग-रूप दिया है
इसलिय
कि इस ससार मे
हमारी एक पहचान बन सके।
बडी आसानी से
इ सान न
धाखा दिया
इश्वर को और अपन आप का।
हम वा कदापि नही हात
जैसे लोगों क सम्मुख
पहिचान जाते हैं ।

छलना

बडा साम्य है
कायल व मनुष्य
क स्वभाव में ।
कोयल हर बार
अपन अंड
खुद चाहगी सना
पर एसा करगी नही ।
मनुष्य भी अपनी
हर गलती क बाद
पछतायगा
सुधारना चाहगा
अपन आप को
मगर सुधरगा नही ।
जीवन क अन्तिम क्षण तक
अपन आप को ही
छलत हैं दोनों ।

मार्ग-दर्शक

हर राह
प्रयास करता था मैं भी
चलने का
रास्ता भूल जाता था मगर ।
फिर आशा होती यूं
रास्ते का राही कोई
रास्ता दिखायेगा मुझे ।
रास्ता भी बताते थे राही
फूलों का नहीं
कांटों का ।
कांटों पर चलना भला
कैसे अच्छा लगता मुझे ?
मैं फिर लौट आता पीछे
अब मैं भी नहीं चलता
भटके हुए राहियों को,
वह रास्ता बताता हूं
जिस पर मैं चल न सका था ।
लोग शायद यही समझते हैं
मैं चलकर आया था
उस रास्ते पर ।
पूछते हैं मुझसे
उस रास्ते की कठिनाइयां ।
अच्छी तरह समझा देता हूं मैं उन्हें
अब एक भय हो गया मुझे
कौन, किसे, कब कहां, कैसे

रास्ता दिखायगा सही ?
तरस आता है
रास्ता पूछने वालों पर
गुस्सा आता है खुद पर ।

अन्तिम पड़ाव

आज
इस शहर में
अंतिम दिन है मेरा।
फिर भी
जाने से पहले
वह सब देख जाऊंगा
जो कुछ सोचकर आया था
इस शहर में।

मेरी नाव

पहाड की तलहटी मे बहती नदी
उस नदी मे
मरी नाव
नदी क प्रवाह
क साथ
बह रही है ।
कहा आ गया मैं ?
फिर भी
समुद्र तक ता
पहुच ही जाऊगा ।

वाटिका

अपनी वाटिका को
मरुस्थल बनने से
बचालो तुम।
मुरझा जाये यदि कोई पौधा
उखाड़ कर फेंक दो उसे।
दूसरा पौधा
लगा लो तुम।
हरी भरी वाटिका
में
स्वच्छन्द वातावरण
बना लो तुम।
ताकि तुम्हारी वाटिका
एक मिसाल बन जाये,
उन लोगों के लिये,
जिन की वाटिकाएं
मरुस्थल बनी हैं।
शायद तुम्हारी
वाटिका को देख
वे फिर से सजा लें
अपनी मरुस्थलों को।

बैसाखी

एक इंसान
लगड़ा रहा था।
बैसाखिया के सहारे
चलने का प्रयास
कर रहा था।
लोग उसे धक्का
दे देते
गिरा देते उसे
लेकिन
मैंने सम्भाल लिया उसे
भगा दिया गिराने वालों को।
उस लगड़े का
खूब ख्याल रखा।
बैसाखिया उसकी
थाम ली मैंने
फिर चलना सिखाया उसे
जल्दी ही चलना सीख गया वह।
फिर उसने
थमा दी बैसाखिया अपनी मुझे
उन्हीं के सहारे चलना सिखा दिया
और जाते जाते
धक्का भी दे गया मुझे।
अब धक्का देने की
लोगों की आदत पड़ गयी।
वे ही मुझे

गिराने का प्रयास करते हैं
जिनसे मैं
खूब प्यार करता हूं।
किसे पुकारूं ?
वह नहीं है यहां
जिसे मेरी अब सहायता करनी थी।

इच्छा

नदी का किनारा
समीप एक मन्दिर
करतल ध्वनि का स्वर
सभी की इच्छा
सभी की पुकार
कोइ सुन न सुन
चाहत हैं सभी की
वह सिर्फ हमारी सुन ।
मेरे जैसा कोइ
अड़कर बैठ गया वहा
उसी के समीप
चाहता है वह मान जाये
मेरी इच्छा
गलत हो या सही
वह मान नहीं रहा
कहता है सिर्फ सही इच्छा बताओ ।
बोला
सभी की इच्छाए
मेरे ही जैसी हैं प्रभु
सभी की इच्छा
सभी की पुकार
कोइ सुन न सुने
सन्देह ही सन्देह ।

जिन्दगी

तेरे समीप आने
व
तुम से दूर जाने
के रास्ते का नाम
ही जिन्दगी है।

मुस्करा रहे हो देवदूत ?

आज आय हा दवदूत ?   ḥ   -
कव स इत जार थी तुम्हारी   ,
दूर खड क्यों मुस्करा रह हा ?
पास आकर बैठ क्यों नहीं जात ?
बैठो यहा बहुत इ तजार किया हैं
मैंन तुम्हारा
थाडा इ तजार तुम करा अब मरा
काफी पियोंग या चाय ?
कुछ बनाता हू तुम्हार लिय मैं
पहले राज आत थ मेर पास
अब बहुत कम आत हा
बाल नहीं रह हा तुम ?
मुस्करा ही मुस्करा रह हा ?

याद

थक गया हू जि दगी स
डूबा जा रहा हू
जि दगी क बिगडत हालातों से
जरा पास आकर दख
मरी हर चीज चोरी हा गयी
सिफ यादे मरी हैं
लकिन बदद वक्त क थपड
उन यादों का भी
मिटा दना चाहत हैं।

स्मरण

अन्त का स्मरण रहे
तो
पल भर के समान
लगती है जिन्दगी
यदि अन्त का स्मरण
न रहे तो
पल भर में
बीत जाती है जिन्दगी।

श्मशान

भयभीत
हाने पर
मैं कहीं और नहीं
श्मशान में
जा बैठता हूं।
शकुन मिल
जाता है वहां
यह दख
मुर्दे जिंदा
इन्सानों से
कितन बहतर हैं ?

भय

सुनसान
राहों से
गुजरते वक्त
मुझे कभी
भय नहीं लगता।
भय लगता है मुझे
महानगरों से
वहां के शोर से
उस
चीख पुकार से
जो सिर्फ
गूंगे बहरों व अन्धों
के समुदाय
के सम्मुख
गूंज कर
शोर में कहीं
खो जाती है।

स्वछन्द वातावरण

सभी तरफ
विहुफ रह हैं पंछी
गुनगुना रह हैं गीत
अपनी भाषाओं के।
खिल रहे हैं
हर दिन नय फूल।
कितनी नवीनता है
वातावरण में।
सभी को
अपन आप पर
भरोसा व विश्वास
है कितना ?
स्वछन्द वातावरण
बनाने क हम
शौकीन
अवश्य हैं
पर उस वातावरण
में जीने क
नहीं ।

कल्पना

चलो आज
हम खुश हो लें
किसी ऐसी
झूठी कल्पना के
सहारे
जो कल्पना
सत्य के समान
लगने का
थोड़ा थोड़ा
सन्देह पैदा करती है।

सच और झूठ

सपर के पास
साप भी हैं
सांप का जहर भी।
साप इसलिय कि
झूठ याल कर
उस दूध पिलान के नाम
जनता को ठगा जाये।
जहर इसलिय
कि
सच यालकर उसे
बधा जाय।
अव्वल दर्जे का
स्वार्थी इंसान।
सच और झूठ
दाना के प्रयाग में
माहिर हाता है।
दोनो म स
किसी एक के
प्रयाग में नहीं।

चाहत

कहीं न कहीं
किसी न किसी के पास
वह सब कुछ है मेरा
जिसे ढूंढ रहा हूं मैं।
कितने वर्ष
न जाने कितनी
सदियां
बीत गयीं
उस पुरानी चाहत में।
अब तो मिल जाय वह
जिसे मैंने अपना समझा है।
फिर मैं सांस लूंगा ठण्डी
एक पल के लिये
सिर्फ एक पल के लिये।

मुस्कुराने का राज

पुलकित हो
रहा है चन्द्रमा
सूर्य का प्रकाश
पा
और उसे परावर्तित कर
पृथ्वी पर
अपने समीप कुछ न रखना
ही उसके
मुस्कुराने का राज है।

सन्तोष

कुछ लाग स ताष
इसलिय रखत हैं कि
स ताष
रख लने पर
सब कुछ मिलने
की आशा हा
जाती हैं।
बस इसी आशा क
वशीभूत हा
हम अपना
स ताष खा
बैठत हैं ।

प्यार

प्यार
एक मौसम नहीं
जो कभी-कभी आता है
लौटकर हर बार
चला जाता है
लाख कोशिश करने
पर भी
जिस तरह
मौसम हमेशा के लिये
रुकता नहीं
ठीक उसी तरह
प्यार भी रुकता नहीं।

अज्ञात

तुम अज्ञात य
अज्ञात में
मिल गय
अज्ञात रहन की
तुम्हारी कामना
पूण हुइ।
सिफ मर लिय
तुम एक
अज्ञात वास
छाड गय
जिसमें तुम्हार
ज्ञात न अज्ञात
हान का
इतिहास
छिपा है।

संसार का रहस्य

आज तुझे बताना पड़ेगा
मुझे इस ससार का रहस्य
फिर मैं इस ससार
के बारे में नहीं
तुम्हारे बारे में सोचूंगा ।
सोचकर ससार के बारे में
गलत दिशा दी है मैंने
अपने आप का ।
तू आज बता दे मुझे
इस संसार का रहस्य ।

शरीर का बन्धन

आत्मा उदास है
उसके पास पंख है
उड़ना चाहती है
मिलना चाहती है
अपने प्रियजन से
मगर शरीर बाधक है
शरीर रूपी जेल में
कैद है आत्मा
कैसे मिले प्रियतम से
दूर है मन्दिर उसका ।

पहचान

चाँद पर पहुँचा इंसा, आकाश में झाँक आया
सागर की असीम गहराइयों को नाप आया
सदियों से मगर जो हमसफ़र है उसका
उसी हमदम को न आज तक पहचान पाया।

भटकन

सता-सता कर
शाति दता हैं तू।
दु ख पर दु ख द
थाडा सुख दता हैं तू।
बहुत भटकाव क बाद
भटकती आत्माओं का
पास बुला लता हैं तू।
अपन आपका
जान जाय इ सान
इसलिय
इतनी भटकन
पैदा करता है तू।

इत्तिफ़ाक

गुज़रना
एक इत्तिफ़ाक़ है
चाहे राह से गुज़रो
या दुनिया से गुज़रो।

इन्सान का वजूद

बसी है बस्तिया ऐसी जहा दौलत निहाल है
साजो-सामा ऐशो इशरत बमिसाल है
साधन सवारी, जि सों की कोइ कमी नही
बस इ सान का वजूद ही एक बाकी सवाल है।

संवेदना हीन

कंक्रीट के जंगलों का फैलाव यथा खूब बढ़ा है
नगरों नागरिकों पर पैसे का रंग रूप चढ़ा है
इस अभिजात्य भीड़ में खो गई है संवेदना
जिसे ढूंढता इन्सान बेदम बन के खड़ा है।

निरर्थक राह

निरर्थक राहें हैं मरी ।
हर क्षण दौड़ा हू
बहुत तज्ञ दौड़ा हू ।
मरी दौड का दख
अन्दाजा लगाया हैं लागों ने
बहुत कुछ पा लिया मैंन
उनका अन्दाज
कितना गलत हैं ?
क्या किसी क पास
जान की
चाह रखनी चाहिय
किसी निरथक राह पर ?

नफरत का जहर

अब के चली है, ऐसी लहर मेरे शहर में
वह भी दरिंदे बन उठे है जिसके कहर में
दुआए मांगते इबादत में एक साथ थे जो हाथ
या रब अब वे ही डूबे है नफरत के जहर में।

आंसू और मुस्कान

दुनिया में
आंसू भी हैं,
और मुस्कान भी है।
मुस्कान इसलिए कि
बहुत कुछ करने को
मिला है
यह इन्सानी जीवन।
आंसू इसलिए कि
बिना कुछ
किए बगैर
गंवा दिया हमने
यह इन्सानी जीवन।

कुछ ही घंटों का फेर

इस रात भी
सुनसान हैं सड़कें।
मैं फिर चल दिया
सुनसान सड़कों पर भटकने।
यूं लग रहा है मानो
प्राणियों का अस्तित्व
समाप्त हो गया।
सन्नाटा छाया है वातावरण में
कुछ ही घंटों का फेर
कितना कुछ बदल देता है ?

शिक्षा की सार्थकता

शिक्षा साथक बन तुम्हारी ऊच पद का प्राप्त करा
चल मानवता के आदर्शों पर राष्ट्र का दु ख दै य हरा
हो उदात्त विचार तुम्हार श्रम निष्ठा का अपनाओ
समता, एक्य प्रम भाव स सबक प्रिय तुम बन जाओ।

आत्म विश्वास

कदम बढ़े उस ओर तुम्हारे जहां न शोक संताप हो
श्रम और स्वावलम्बन द्वारा मानवता का विकास हो
नव वर्ष में संकल्प हमारा सत्य निष्ठा अपनायेंगे
राष्ट्र का उन्नयन करेंगे, जीवन सफल बनायेंगे ।

चीख

एक चीख
दौड़ते लोग
समीप आता मैं
चीखने वाले को
मेरा सहारा
उसके पक्ष में
मेरा चीखना
समाज के खुदाओं का
मुझे नकार देना
साथ ही सताना मुझे
इसलिए कि
चीखने वाले के
समीप क्यों गया मैं
यही मेरा अपराध
उपेक्षा भरी दृष्टियां
मेरी सजा
सुनो जरा
यदि सुन सको तो
एक चीख
मेरी अपनी भी।

कितना झूठ ?

पुरुषों
को विवाह की सलाह
इसलिए
दी जाती है कि
अकेले जिन्दगी जीते-जीते
थक जाओगे।
स्त्रियों को इसलिये
कि तुम्हारा
जीवन पूर्ण होगा
तुम्हें सहारा मिलेगा।
कितना झूठ बोलकर
लोग
दो पवित्र आत्माओं को
विवाह के बंधन में
बांध देते हैं ?

हताश

हताश
होना उतना
बुरा नहीं है
जितना बुरा
जिन्दगी से
हताश
दिखाई देना है।
मूर्ख
हो तुम
यदि हताश हो
जिन्दगी से।
महामूर्ख हो तुम
यदि हताश
दिखाई देते हो।